विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	**P1: आधुनिक हिंदी कविता-1**
इकाई सं. एवं शीर्षक	**M8: 'साकेत' पृष्ठभूमि और उद्देश्य**
इकाई टैग	**HND_P1_M8**

निर्माता समूह	
प्रमुख अन्वेषक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
प्रश्नपत्र समन्वयक	**प्रो. चित्तरंजन मिश्र** प्रोफेसर, हिंदी एवं भारतीय भाषा विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उ.प्र.) ईमेल : chittranjanmishra@gmail.com
इकाई लेखक	**डॉ कमलानन्द झा** एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा, बिहार ईमेल : jhakn28@gmail.com
इकाई समीक्षक	**प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित** प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र) ईमेल : suryadixit123@gmail.com
भाषा संपादक	**डॉ. आनंद वर्धन शर्मा** प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल: anandsharma_64@yahoo.co.in

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. खड़ीबोली में महाकाव्य की रचना
4. उपेक्षित स्त्री पात्रों की प्रतिष्ठा
5. राम काव्य परंपरा में सार्थक हस्तक्षेप
6. भारतीय जीवन-दर्शन और आदर्श का महत्त्व प्रदर्शन
7. गांधीवादी जीवन मूल्य की साहित्यिक अभिव्यक्ति
8. उदार सामाजिक व्यवस्था की आकांक्षा
9. वैष्णव भक्ति (रामभक्ति) के प्रति अगाध निष्ठा का प्रतिपादन
10. विश्व-कल्याण की भावना
11. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप-

- मैथिलीशरण गुप्त के साकेत काव्य की रचनात्मक पृष्ठभूमि को जान सकेंगे।
- गुप्तजी के जीवन-दर्शन को भली-भाँति समझ सकेंगे।
- रामकाव्य परंपरा से परिचित होने के साथ, इस परंपरा में साकेत का स्थान निर्धारित कर पायेंगे और गुप्तजी पर एक ओर भक्ति तो दूसरी ओर गांधी के प्रभावको समझ पायेंगे।

2. प्रस्तावना

मैथिलीशरण गुप्त समय-सचेत कवि हैं। उनका अधिकांश काव्य तत्कालीन असहयोग आंदोलन की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त स्वातंत्र्य संग्राम के उन दिनों सुधार आंदोलन, अतीत प्रेम, ग्रामोत्थान, राष्ट्रीय संगठन आदि के जो कार्यक्रम चल रहे थे, उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रतिफलन उनके काव्य में यथावसर हुआ है। उनके कृतित्व पर समसामयिकता की छाप स्पष्ट है। गुप्त जी की रचनाओं में यथार्थ कम, आदर्श अधिक मुखर हुआ है। वे मध्ययुगीन आस्तिकता, ईश्वरीय रहस्य और सांप्रदायिकता से आगे बढ़कर मानवीय भावना तक तो आते हैं, किंतु मानव के अंतर्रहस्य, उसका यथार्थ रूप, अस्तित्ववादी, स्वच्छंदतावादी स्वरूप को उद्घाटित कर पाने में सफल नहीं हो पाते हैं। प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित के अनुसार, " साकेतकार पर अवतारवाद, वैष्णव मत, प्रारब्धवाद, देवोपासना और पौराणिकता का प्रभाव पड़ा है। इससे उसकी आधुनिकता पर आघात लगा है। साकेत पुरातन राम-काव्यों का नया संस्करण है अवश्य, पर वह नितांत नया नहीं है। यह उन्हीं के लिए उपजीव्य है जो यदि भक्त नहीं तो आस्थावान अवश्य हों, ईश्वरत्व नहीं तो मानवीय आदर्श के समर्थक अवश्य हों, सांप्रदायिक धर्म के नहीं तो राष्ट्रीय संस्कृति के अनुवर्तक अवश्य हों। गुप्त जी की आधुनिकता वैज्ञानिक तथ्य से अधिक सांस्कृतिक तत्व से प्रणीत है। यह कवि की दुर्बलता नहीं, बल्कि उसकी सैद्धांतिक विवशता है।" गुप्त जी की इस रचनागत पृष्ठभूमि को समझे वगैर साकेत के उद्देश्य को समझना कठिन है।

3. खड़ीबोली में महाकाव्य की रचना

गुप्त जी का सर्वप्रमुख उद्देश्य खड़ीबोली में एक उत्कृष्ट प्रबंध काव्य रचने का था, क्योंकि उन दिनों ब्रजभाषा काव्य-रचना का प्रमुख माध्यम थी। लोगों में ब्रजभाषा में कविता पढ़ने का संस्कार प्रबल था। किंतु ब्रजभाषा का माधुर्य स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हिंदुस्तान की समग्र जटिलता और जीवन-जगत के संपूर्ण संघर्ष को वाणी प्रदान करने में अवरोध उत्पन्न कर रहा था। मैथिलीशरण गुप्त जी को भी स्वयं खड़ीबोली में काव्य-रचना करने में कठिनाई होती थी। उन्होंने सन् 1904 में महावीर प्रसाद द्विवेदी को लिखे एक पत्र में इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है, 'खेद का विषय है कि इस दास को स्वभाव से ही खड़ीबोली से कुछ अरुचि सी है।' एक बार जब गुप्त जी ने 'सरस्वती' में अपनी कविता भेजी तो महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने उन्हें लिखा, "आपकी कविता पुरानी भाषा में लिखी गयी है। सरस्वती में हम बोलचाल की भाषा में ही कविता छापना पसंद करते हैं।" यह बात गुप्त जी के दिल में धंस गई, और उन्होंने इसे एक चुनौती के रूप में लिया। यही चुनौती कालांतर में साकेत लेखन का आधार बनी।

उन दिनों खड़ी बोली में महाकाव्य लिखना अत्यंत दुष्कर कार्य था। किंतु गुप्त जी ने इस दुष्कर कार्य को करने का अपार साहस दिखलाया। यद्यपि डा. नगेन्द्र ने साकेत को 'जीवन-काव्य' की संज्ञा दी है किंतु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसे महाकाव्य मानते हैं। पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने उसे एकार्थ- काव्य की संज्ञा दी है। उनका कथन है कि 'महाकाव्य में कथा - प्रवाह विविध भंगिमाओं के साथ मोड़ लेता आगे बढ़ता है किंतु एकार्थ- काव्य में कथा

प्रवाह के मोड़ कम होते हैं। अधिकतर वर्णनों या व्यंजनाओं पर ही कवि की दृष्टि रहती है। गंगावतरण, प्रियप्रवास, साकेत, कामायनी आदि वस्तुतः एकार्थ-काव्य ही हैं।'

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी साकेत के बड़े प्रशंसक हैं, उसे महाकाव्य भी मानते हैं किंतु उसकी सीमाओं के उद्घाटन से भी पीछे नहीं हटते। उन्होंने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्यः बीसवीं शताब्दी' में लिखा है, " साकेत जैसे अनतिदीर्घ महाकाव्य में यदि घटनाओं का पूर्ण समाहार नहीं होता, तो सिद्ध है कि काव्य के क्षीर सागर में पानी पड़ रहा है। साकेत का अन्तरंग भी हमारे आरोप का समर्थन करता है। काव्य के प्रथम आठ सर्गों में जितने चित्र हैं, सब निकट से खींचे गए हैं। निकट होने के कारण वे छोटे जान पड़ते हैं। मस्तिष्क पर उनका यह प्रभाव पड़ता है कि वे म्रियमाण हैं। महाकाव्य में ऐसे चित्र शोभा नहीं देते। दूसरी तरफ साकेत के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं, " यों तो महाकाव्य की व्यापकता और महत्त्व के कोई सुनिश्चित प्रतिमान नहीं हो सकते और अन्ततः इस संबंध का निर्णय मतभेद से रहित नहीं हो सकता, किन्तु साकेत काव्य का साहित्यिक जगत में जो सम्मान है, हिन्दी के ऐतिहासिक विकास में जो उसकी देन है, युग-चेतना के जो नवोन्मेष उसमें अपनी आभा बिखेर रहे हैं, उन्हें देखते हुए साकेत को महाकाव्य न कहना अन्याय होगा।"

4. उपेक्षित स्त्री पात्रों के महत्त्व की प्रतिष्ठा

साकेत काव्य की रचना की पृष्ठभूमि में प्राचीन भारतीय संस्कृति और साहित्य में उपेक्षित स्त्री पात्रों को महत्त्व प्रदान करना था। कई कारणों से प्राचीन भारतीय साहित्य में कई महत्त्वपूर्ण स्त्रियां उपेक्षित रह गईं, जबकि उनका योगदान भारतीय संस्कृति में अप्रतिम रहा है। इस विषय पर सबसे पहले ध्यान दिया कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने। उन्होंने एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंध 'काव्येर उपेक्षिता' लिखा। इस क्रांतिकारी लेख में उन्होंने लिखा कि, " हम कह सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में काव्य-यज्ञशाला की प्रांतभूमि में जो कितनी ही स्त्रियां अनादृत होकर खड़ी हैं, उनमें प्रधान स्थान उर्मिला का है। हाय, अव्यक्त वेदना देवी उर्मिला एक बार तुम्हारा उदय प्रातःकालीन तारा की भांति महाकाव्य के सुमेर शिखर पर हुआ था। उसके बाद अरुण लोक में तुम्हारे दर्शन नहीं हुए। कहां तुम्हारा उदयाचल है और कहां अस्ताचल- यह प्रश्न करना भी सब लोग भूल गये।" इस आलेख ने भारतीय साहित्य जगत में रचनाकारों को काफी उद्वेलित किया। इस लेख से प्रभावित होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी एक लेख लिखा 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता'। इस आलेख में उन्होंने चिंता जताते हुए लिखा, " खेद की बात है कि उर्मिला का उज्ज्वल चरित्र-चित्र कवियों द्वारा आज तक उसी तरह ढकता आया।" उक्त दोनों लेखों के कारण गुप्त जी के मन में उर्मिला और यशोधरा का चरित्र-चित्र उभर आया। यद्यपि साकेत है रामकथा, किंतु इस कथा के पोर-पोर में उर्मिला समायी हुई है। उर्मिला के व्यक्तित्व की विराट्ता देखनी हो तो साकेत के नौंवे सर्ग को पढ़ना चाहिए।

साकेत में उर्मिला के चरित्र पर गुप्त जी ने अपनी करुणा-जनित कल्पना से प्रकाश डाला है। बाल्मीकि और तुलसी ने उर्मिला के त्याग पर चुप्पी साध ली थी-पर गुप्त जी उर्मिला के त्याग को लोक-भावभूमि के केंद्र में लाये हैं। साकेत के आरंभिक सर्गों में उर्मिला तथा लक्ष्मण का विलक्षण व्यक्तित्व चित्रित किया गया है। यहां कवि का ध्यान उर्मिला पर केंद्रित है। नवम सर्ग तो उर्मिला की विरह-व्यथा से ही गीला है।

साकेत का केंद्र बिंदु उर्मिला है जो मूल राम कथाओं में एक उपेक्षित पात्र की तरह ही चित्रित हुई हैं। गुप्त जी को उर्मिला की व्यथा, विरह, वेदना, त्याग और व्यक्तित्व की दृढ़ता ने प्रभावित किया है। उर्मिला के व्यक्तित्व के इन अछूते पक्षों को उन्होंने आधुनिक संदर्भों में उद्घाटित किया है। गांधी युग में जब गुप्त जी रचना कर रहे थे तब

समाज में व्यक्ति का उतना महत्त्व स्थापित नहीं हो पाया था और परिवार समाज की एक प्रमुख इकाई था। इसलिए भी नारी के व्यक्तित्व के जिन पक्षों पर उनका अधिक ध्यान गया वे थे उसका मातृत्व और पत्नीत्व। इसी संदर्भ में उसकी स्वतंत्र सत्ता और महत्ता है। साकेत में गुप्त जी ने उर्मिला के अतिरिक्त कैकेयी, सुमित्रा, मांडवी आदि स्त्री पात्रों को भी गरिमा से मंडित किया है। उर्मिला और मांडवी तो गुप्त जी की अपनी सृष्टि है। इन चरित्रों में कल्पना की नवीनता देखते ही बनती है।

5. राम काव्य परंपरा में सार्थक हस्तक्षेप

भारतीय जीवन एवं संस्कृति के महान प्रतिनिधि महाकाव्यों में रामायण और महाभारत दो श्रेष्ठतम महाकाव्य हैं जिनमें मानवीय जीवन और संस्कृति का इतिहास सुरक्षित है। रामायण भगवान राम के जीवन की गाथा है जो हजारों वर्षों से इस देश की सांस्कृतिक प्रेरणा रही है और जिस पर इस युग के महाकवियों ने अपनी कलम उठाई है। साकेत का एक परम उद्देश्य इसी परंपरा में सार्थक हस्तक्षेप करना है जिसमें भगवान राम के साथ-साथ उर्मिला एवं अन्य स्त्री-पुरुष चरित्रों की व्याख्या आधुनिक चिंतन के आधार पर की जा सके।

आलोचक कृष्णदत्त पालीवाल ने रामकाव्य परंपरा में तुलसीदास के रामचरितमानस और साकेत के बीच फर्क करते हुए लिखा है, "यह भिन्नता अपने मूल में मध्ययुगीनता और आधुनिकता की भिन्नता है। मध्ययुगीन काव्यकार की मानसिकता पुराणों में से, शास्त्रों की विधि-निषेध वाली आज्ञाओं, संतों और धर्माचार्यों की आध्यात्मिक अनुभूतियों के संश्लेष से निर्मित हुई थी। किंतु, आधुनिक भारत की नवीन मानसिकता पर ज्ञान- विज्ञान की नवीन चिंतन-धाराओं का गहरा प्रभाव था। पूर्व और पश्चिम की टकराहट से भी भारतीयों में एक नवीन आत्म-चेतना उद्बुद्ध हुई थी और इस चेतना को तिलक, अरविंद, विवेकानंद, दयानंद और गांधी ने नयी चिंतन-धारा भी दी थी। नतीजा यह हुआ कि एक नये मानव का जन्म हुआ जो अपने संस्कारों में मध्ययुगीनता से काफी हटकर था।" मूल रूप से इसी भिन्नता ने साकेत को 'अभिनव रामकाव्य' की संज्ञा दिलाई है।

गुप्त जी ने 'साकेत' में राम को अवतारी रूप में कम, युग-पुरुष के रूप में अधिक प्रस्तुत किया है। राम के व्यक्तित्व- निर्माण में उनका यह आदर्श प्रमुख है-

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन- सम्मुख धन को तुच्छ बताने आया।
सुख शांति हेतु मैं क्रांति मचाने आया।
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।

वास्तव में "गुप्त जी ने साकेत में रामकाव्य-परंपरा का युग-बोध के प्रभाव से नवीन - संशोधन-संपादन प्रस्तुत किया है। भारतीय साहित्य में राम कथा हमारी मूल्य चेतना की धुरी ठहरती है। दिलचस्प बात यह है कि यह राम कथा कभी तालाब बन कर नहीं रही, नदी बनकर यह राम-कथा कभी विस्तार में कभी गहराई में उतरकर काट करती हुई लगातार प्रवाहित रही है। इस रामकथा का केंद्र है-साकेत। यहीं हनुमान तक आकर कहानी सुनाते हैं। गुप्त जी इस ढंग के और ऐसे समर्थ कथाशिल्पी हैं कि हम रामकथा का स्पर्श, श्रवण करके ही नहीं रह जाते-उसमें अवगाहन करते है। रामकाव्य परंपरा में साकेत की अपनी कुछ सीमाएं हैं, जैसे कवि राम के चरित्र को भी भव्यता प्रदान करना चाहता है और उर्मिला के चरित्र की विराट्ता को भी अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता है। किंतु दोनों का संतुलन कहीं-कही साकेत में बिखर जाता है। कम से कम इन दोनों चरित्रों के निर्माण की प्रक्रिया में लक्ष्मण का कद बहुत छोटा हो गया है। इस सब के बावजूद इन्होंने आधुनिक रामकाव्य लिखने की जिस परंपरा का आरंभ किया वह बाद

में चलकर बहुत फला-फूला। निराला जी से लेकर आज के कई कवियों ने भी रामकाव्य लिखे हैं। रामकाव्य परंपरा में साकेत के महत्त्व को उदघाटित करते हुए नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं, "साकेत काव्य में रामायण की कथा जिस सतर्कता अथवा स्वाभाविकता से सजाई गई है, उसके लिए कवि की प्रशंसा की जानी चाहिए। कई स्थानों में कथा के तार बड़ी बारीकी से जोड़े गए हैं। उर्मिला के विरह- वर्णन में उद्दीपन बनकर बालकांड की जो कथा आई है, वह मैथिलीशरण जी की श्रेष्ठ कला का परिचय देती है।"

6. भारतीय जीवन-दर्शन और आदर्श का महत्त्व प्रदर्शन

प्राचीन भारत का जीवन-दर्शन निवृत्तिमूलक था। आध्यात्मिक दृष्टि से यह जीवन-दर्शन चाहे जितना ऊँचा माना जाता हो, परंतु इससे सामाजिक जीवन में कोई प्रगति संभव नहीं थी। दूसरी ओर पश्चिम का जीवन-दर्शन प्रवृत्तिमूलक होने के कारण समाज को प्रगति की ओर ले जाने की क्षमता रखता था, परंतु वह भौतिकवाद के दोषों से आक्रांत और मनुष्य को अंतिम लक्ष्य तक ले जाने में असमर्थ था। अतः भारतीय चिंतकों ने भारतीय निवृत्तिमूलक दर्शन में पाश्चात्य प्रवृत्ति का समन्वय करके जीवन में त्याग की महत्ता के साथ उसके प्रति अनुराग उत्तन्न किया। गुप्त जी का जीवन दर्शन प्रवृत्तिमूलक है। इसमें कर्म से भागने की शिक्षा नहीं दी गई है। ध्यान देने की बात यह है कि उन्होंने यद्यपि प्रवृत्तिमूलक एवं कर्मठ जीवन दर्शन को अपनाया है परंतु भौतिकता को कभी तरजीह नहीं दी। बल्कि अध्यात्म को भौतिक मूल्यों से अधिक स्वीकारा है। कहा जा सकता है कि उन्होंने भौतिकवाद से आध्यात्मिकता को महत्त्व दिया है। "गुप्त जी का उद्देश्य साकेत के माध्यम से पाश्चात्य और पौर्वात्य, प्रवृत्ति और निवृत्ति, भौतिकता और अध्यात्म, प्रेम और त्याग का समन्वय स्थापित करना है। दूसरे शब्दों में धरती पर स्वर्ग अथवा भौतिकता की पृष्ठभूमि पर अध्यात्म की अवतारणा की है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि गुप्त जी ने भारतीय जीवन दर्शन को अपने काव्य का आधार बनाया है। और उसी के अनुरूप अपने महाकाव्य की संरचना की है। साकेत के पात्रों, प्रसंगों, कथाओं और उपकथाओं के माध्यम से गुप्त जी ने भारतीय जीवन के सनातन मूल्यों का प्रतिपादन किया है और नवीन जीवन मूल्यों को उनके साथ मिलाकर पूर्णता प्रदान की है।

7. गांधीवादी जीवन मूल्य की साहित्यिक अभिव्यक्ति

मैथिलीशरण गुप्त पर महात्मा गांधी का गहरा असर था। उन दिनों संपूर्ण भारतीय राजनीति और साहित्य पर गांधीवादी प्रभाव को लक्षित किया जा सकता है। मैथिलीशरण गुप्त की जीवन-शैली भी गांधी जी की जीवन शैली से अनुप्राणित थी। इसलिए गुप्त जी की एक महत्त्वपूर्ण आकांक्षा साहित्य के माध्यम से गांधीवादी दर्शन को विस्तार प्रदान करना था। दरअसल स्वयं गांधी जी भी रामकथा और रामराज्य से अत्यधिक प्रभावित थे और गुप्त जी तो रामभक्त थे ही। इसलिए गुप्त जी का राज्यादर्श वही था जो गांधी जी का था। मूल रूप से गुप्त जी का राज्यादर्श गांधी जी का रामराज्य है। गुप्त जी के अनुसार राज्य चाहे कैसा भी हो, वह लोकसत्तात्मक हो या राजसत्तात्मक या फिर समाज सत्तात्मक, उसका आदर्श न्यायपरक होना चाहिए। गुप्त जी द्वारा प्रतिपादित साकेत का राज्य भी प्रजा की धरोहर है, प्रजा के हित का औचित्य उसमें है। राज्य राजा के भोग के लिए नहीं है वरन् जनता के कल्याण के लिए है। साकेत के राम उसी को इस रूप में रखते हैं-

तुम्हें रुचता है यह अधिकार?
राज्य है प्रिये, भोग या भार
बड़े के लिए बड़ा ही दंड
प्रजा की थाती रहे अखंड

गुप्त जी के साकेत की मानें तो राजा को केवल व्यवस्थापक होना चाहिए। जहां स्वार्थ भावना होगी वहां राष्ट्रप्रेम कहां? ऐसा राजा राष्ट्र को प्रगति के स्थान पर ले जाने के स्थान पर विनाश की ओर ले जायेगा। स्वार्थ के बजाय त्याग भावना होगी तभी देश का कल्याण होगा। स्वार्थी राजा का गुप्त जी विरोध करते हैं। साकेत में कैकेयी का स्वार्थ विपत्ति को आमंत्रित करता है, अतएव शत्रुघ्न विद्रोह करते हुए कहते हैं-

राज पद ही क्यों न अब हट जाय?
लोभ मद का मूल ही कट जाय।

इस तरह हम देखते हैं कि गुप्त जी ने साकेत की रचना गांधी जी के राजनीतिक आदर्शों को लेकर की है।

8. उदार सामाजिक व्यवस्था की आकांक्षा

मैथिलीशरण गुप्त सामाजिक व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव के पक्षधर नहीं हैं।सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों और जटिलताओं के पचड़े में न पड़कर ऊपर-ऊपर उसे आदर्श और सुविधापूर्ण बनाना चाहते हैं। यही कारण है कि सामाजिक व्यवस्था में वे वर्णव्यवस्था तक का औचित्य निरूपण करते हैं। साकेतकार संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था के प्रति आग्रहशील हैं साकेत का राम परिवार हिंदू परिवारों का आदर्श है। पारिवारिक सदस्यों का परस्पर-व्यवहार, पारिवारिक मर्यादाबोध, कर्तव्य का अनुशासन, इन पात्रों के माध्यम से बड़ी सुघरता के साथ व्यंजित हुआ है। साकेत का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पाठकों को दांपत्य जीवन के आदर्शतम भारतीय रूप से साक्षात्कार करना था। इस दांपत्य जीवन में पति पत्नी के प्रति उदार रहता है और पत्नी का कर्तव्य पति के लिए आत्मोत्सर्ग कर देने में है। उर्मिला की वास्तविक पहचान लक्ष्मण के विरह में तड़पने और आहें भरने में है। पति को भला -बुरा कहना भारतीय संस्कृति को मान्य नहीं। भ्रांति वश लक्ष्मण को वन से वापस लौटते देख उर्मिला भला-बुरा कहती हैं और पश्चाताप करती हैं-

अधम उर्मिले हाय निर्दया
पतित नाथ है तू सदाशया?

इन सारी सामाजिक व्यवस्थाओं के भीतर मर्यादा की एक मजबूत डोर बंधी हुई है। और यह मजबूत डोर पारंपरिक भारतीय दृष्टि की है। यहां सीता या राम कोल, किरात आदि को आदर तो दे सकते हैं, किंतु पूर्णतः समानता का दर्जा नहीं दे सकते। इस आदर देने में कृत्य-कृत्य करने की भावना उपस्थित है। जहां छोटे को अपने छुटपन और बड़े को अपने बड़प्पन का अहसास हो, वहां समानता का भाव उत्पन्न हो ही नहीं सकता। यहां शूद्रों को अपनी सीमा में रहना मर्यादा है तो ब्राह्मणों का उदार होना मर्यादा है-

जितने प्रवाह हैं, बहें अवश्य बहें वे
निज मर्यादा में किन्तु सदैव रहें वे।

9. वैष्णव भक्ति (रामभक्ति) के प्रति अगाध निष्ठा का प्रतिपादन

मैथिली शरण गुप्त निष्ठावान वैष्णव भक्त हैं। साकेत में वैष्णव भक्ति एवं अध्यात्म के स्पष्ट दर्शन होते हैं। वैसे देखा जाय तो गुप्त जी अध्यात्मवादी अथवा दार्शनिक कवि नहीं है, वे भावनाशील कवि हैं। प्रकट सत्ता से परे और भी कुछ है, इस संबंध में वे तर्क-वितर्क अथवा संदेह नहीं करते। यह उनकी वैष्णव भावना का, श्रद्धा और विश्वास का क्षेत्र है। उनके वैष्णव हृदय पर राम भक्ति का गहरा रंग चढ़ा है। अन्य देवों के प्रति श्रद्धा होने पर भी अन्य रूप उनके हृदय को इतना आकृष्ट नहीं कर पाते। गुप्त जी रामानुजाचार्य के विशष्टाद्वैतवाद में श्रद्धा रखते हैं। उनके राम ब्रहम के अवतार हैं-

हो गया निर्गुण सगुण साकार है,

ले लिया अखिलेश ने अवतार है।

x x x x x

पापियों का जान लो अब अंत है

भूमि पर प्रकटा अनादि अनन्त है।

गुप्त जी के राम का वाह्य रूप सगुण और साकार है। पापियों का विनाश और धर्म की संस्थापना के लिये उनके राम ने अवतार लिया है। परमात्मा लीलाधाम है, साथ ही भक्त वत्सल भी। वह संसार का सृष्टि चक्र चलाते हैं, राम का जन्म भी आर्य-धर्म के संस्थापनार्थ हुआ था- 'मैं आर्या का आदर्श बताने आया।'

10. विश्व-कल्याण की भावना

भारतीय संस्कृति में 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना अनुस्यूत रही है। मैथिलीशरण गुप्त की संवेदनशीलता क्षेत्रीयता और राष्ट्रीयता से आगे बढ़कर विश्व कल्याण की भावना को प्रचारित-प्रसारित करने की थी। साकेत में हम उनकी इस भावना के दर्शन यत्र-तत्र-सर्वत्र देखते हैं-

किसी एक सीमा में बंधकर रह सकते हैं क्या प्राण?

एक देश क्या, अखिल विश्व का तात, चाहता हूं मैं त्राण।

उनकी आकांक्षा यह है कि संपूर्ण विश्व सुख शांति पूर्वक प्रगति-पथ पर बढ़ता चले। गुप्त जी उदारमना तथा सामाजिक भावना के कवि हैं। उनमें विश्वकल्याण की भावना पूरी तरह भरी हुई है।

गुप्त जी संपूर्ण पृथ्वी की वंदना करते हुए विश्व-भावना को प्रस्तुत करते हैं। पृथ्वी के साथ मानव का अटूट संबंध है। गुप्त जी ने साकेत में राम द्वारा भूतल को स्वर्ग बनाने की कल्पना की है-

भव में नव वैभव प्राप्त कराने आया,

नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।

संदेश यहां में नहीं स्वर्ग का लाया,

इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

11. निष्कर्ष

मैथिलीशरण गुप्त जी की साकेत-रचना का उद्देश्य न तो मनोरंजन था और न ही अर्थोपार्जन और न ही यश, प्रतिष्ठा की प्राप्ति। उनका उद्देश्य खड़ीबोली में भारतीय संस्कृति की मुखर अभिव्यक्ति करने वाली आधुनिक रामकथा लिखने का था। ऐसी रामकथा जो भारत के हिंदू समाज को एक सादगीपूर्ण और निष्ठापूर्ण जीवन जीने की राह बता सके। एक आदर्श हिंदू समाजव्यवस्था की परिकल्पना साकेत का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।